# भाषा

मनुष्य विचार विनिमय केलिए सार्थक शब्दों का प्रयोग करते हैं जिसे भाषा कहते हैं।

**भाषा के दो भेद हैं-**

1. **कथित भाषा** - जिस भाषा को हम मुँह से बोलते और कानों से सुनते हैं उसे कथित भाषा कहते हैं।
2. **लिखित भाषा** - जिस भाषा को हम हाथ से लिखते और आँखों से पढ़ते हैं उसे लिखित भाषा कहते हैं।

## भाषा के अंग -

- **ध्वनि** - कथित भाषा के सबसे छोटे टुकडे को ध्वनि कहते हैं।
- **वर्ण** - लिखित भाषा के सबसे छोटे टुकडे को वर्ण (अक्षर) कहते हैं।
- **शब्द** - वर्णों के सार्थक समुदाय को शब्द कहते हैं। ( क+म+ल = कमल)
- **वाक्य** - शब्दों का समुदाय, जिससे कोई एक बात समझ में आ सके।
  एक वाक्य में कम से कम दो शब्द होते हैं (राम आया, सीता गयी)

## व्याकरण

भाषा को शुद्ध शुद्ध बोलने और लिखने में सहायक नियमों के संग्रह को व्याकरण कहते हैं।

## वर्ण

लिखित भाषा के सबसे छोटे टुकडे को वर्ण (अक्षर) कहते हैं।

## वर्णमाला

भाषा में प्रयुक्त होनेवाले वर्णों की निश्चित संख्या के समुदाय को उस भाषा की वर्णमाला कहते हैं।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

# हिन्दी की वर्णमाला

हिन्दी की वर्णमाला में **चवालीस** (44) वर्ण होते हैं। हिन्दी की वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं

1. **स्वर वर्ण** - जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्रता से होता है उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं।

   अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

## स्वर वर्णों के तीन भेद हैं -

1. **मूल स्वर (ह्रस्व स्वर)** - जिनकी उत्पत्ति स्वतंत्र रूप से हुई है उन्हें मूल स्वर या ह्रस्व स्वर कहते हैं। मूल स्वर चार होते हैं -

   अ इ उ ऋ

2. **दीर्घ स्वर** - मूल स्वर में उसी स्वर के मिलने पर दीर्घ स्वर बनता है।

   अ + अ = आ

   इ + इ = ई

   उ + उ = ऊ

3. **संयुक्त स्वर** - दो विभिन्न स्वरों के मेल से संयुक्त स्वर बनता है।

   अ + इ = ए

   अ + ए = ऐ

   अ + उ = ओ

   अ + ओ = औ

**स्वरों के प्रतिनिधि चिह्नों को मात्रा कहते हैं**

| मूल स्वर | दीर्घ स्वर | संयुक्त स्वर |
|---|---|---|
| अ | आ | ए (अ + इ) |
| इ | ई | ऐ (अ + ए) |
| उ | ऊ | ओ (अ + उ) |
| ऋ | | औ (अ + ओ) |

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

**मात्रा -** एक स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसे **मात्रा** कहते हैं।

**मात्रा के आधार पर स्वरों के तीन भेद हैं -**

1. **<u>एकमात्रिक स्वर</u>** ( ह्रस्व स्वर ) - जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा लगती है उन्हें एक मात्रिक स्वर या ह्रस्व स्वर कहते हैं। **अ इ उ ऋ**
2. **<u>द्विमात्रिक स्वर</u>** ( दीर्घ स्वर ) - जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रायें लगती हैं उन्हें द्विमात्रिक स्वर या दीर्घ स्वर कहते हैं। **आ ई ऊ ए ऐ ओ औ**
3. **<u>प्लुत स्वर</u>** - जिन स्वरों का उच्चारण दो मात्राओं से अधिक लंबा होता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।

   **आ…….. हाँ..... वा.....ह**

   **रामू ऊ ऊ ऊ.....**

## अनुनासिकता

हिन्दी भाषा में अनुनासिकता (Nasalisation) का अपना विशेष महत्व है। हिन्दी के सारे स्वरों का सानुनासिक और निरनुनासिक उच्चारण हो सकता है। निरनुनासिक के स्थान पर सानुनासिक उच्चारण हो जाए तो शब्द का अर्थ ही बदल जाता है।

सास (mother-in-law) - साँस (breath)
काटा (cut) - काँटा (thorn)
दी(given) - दीं (proceeded)
पूछ (ask) - पूँछ (tail)
गोद (lap)- गोंद (the glue)

**अनुनासिकता के आधार पर स्वरों के दो भेद हैं-**

1. **सानुनासिक स्वर** - जब स्वरों का उच्चारण नासिका की सहायता से होता है तब उन्हें सानुनासिक स्वर कहते हैं।
2. **निरनुनासिक स्वर** - जब स्वरों का उच्चारण नासिका की सहायता के बिना होता है तब उन्हें निरनुनासिक स्वर कहते हैं।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

## व्यंजन वर्ण

जिन वर्णों का उच्चारण केवल स्वरों की सहायता से होता है उन्हें व्यंजन वर्ण कहते हैं।

हिन्दी की वर्णमाला में तैंतीस (33) व्यंजन होते हैं -

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व् श् ष् स् ह्

व्यंजन के नीचे जो चिह्न होता है उसे **'हल'** चिह्न कहते हैं। व्यंजन के साथ '**अ**' स्वर के मिलने पर उसका **'हल'** जाता है और वह उच्चारण का योग्य हो जाता है।

व्यंजन को **तीन** श्रेणियों में विभक्त किया गया है-

1. **स्पर्श व्यंजन** - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी न किसी भाग का स्पर्श करती है उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

   क ख ग घ ङ
   च छ ज झ ञ
   ट ठ ड ढ ण
   त थ द ध न
   प फ ब भ म

2. **ऊष्म व्यंजन** - जिन व्यंजनों के उच्चारण करते समय हवा मुँह से निकलकर सीधे बाहर चली जाती है उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

   श ष स ह

3. **अंत:स्थ व्यंजन** - स्पर्श और ऊष्म व्यंजन के बीच में रहनेवाले व्यंजनों को अंतस्थ व्यंजन कहते हैं।

   य र ल व

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

**संयुक्त व्यंजन**

दो व्यंजनों के बीच का स्वर लुप्त रहता है तो दोनों व्यंजन संयुक्त हो जाते हैं जिसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

क् + अ + क् + अ = क्क

प् + अ + प् + अ = प्प

ग् + अ + य् + अ = ग्य

क् + अ + र् + अ = क्र

क् + अ + ष् + अ = क्ष

हिन्दी के कुछ संयुक्त व्यंजनों के विशिष्ट लिपि चिह्न होते है -

क + ष = क्ष  ज + ञ = ज्ञ  त + र = त्र  द + य = द्य

## वर्णों के उच्चारण स्थान

मुख के जिस भाग पर ज़ोर देकर जो वर्ण बोला जाता है उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं।

| उच्चारण स्थान | वर्ण | ध्वनि का नाम |
|---|---|---|
| कंठ (Throat) | अ, आ, क, ख, ग, घ, ह | कंठ्य |
| तालू (Soft Palate) | इ, ई, च, छ, ज, झ, य, श | तालव्य |
| मूर्धा (Hard Palate) | ऋ, ट, ठ, ड, ढ, र, ष | मूर्धन्य |
| दंत (Teeth) | त, थ, द, ध, ल, स | दंत्य |
| ओष्ठ (Lips) | उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म | ओष्ठ्य |
| कंठ और तालू | ए, ऐ | कंठ तालव्य |
| कंठ और ओष्ठ | ओ, औ | कंठोष्ठ्य |
| दंत और ओष्ठ | व | दंतेष्ठ्य |
| मुख और नासिका | ङ, ञ, ण, न, म | अनुनासिक |

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

## उच्चारण प्रयत्न

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो प्रत्येक वर्ण के उच्चारण में मस्तिष्क से लेकर नाभि तक का सारा शरीर प्रयत्न करता है।

**श्वास** (breath) और **नाद** (noice) के मेल से ही वर्णों का उच्चारण होता है। उच्चारण के अवसर पर स्वरतंत्रियों (vocal cords) में होनेवाले कंपन (vibration) से नाद उत्पन्न होता है और वह नाद श्वास अथवा हवा के सहारे बाहर निकल आता है।

**<u>स्वर तंत्रियों में होनेवाले कंपन के आधार पर वर्णों के दो भेद हैं</u> -**

1. **<u>घोष वर्ण</u>** - जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन की मात्रा अधिक होती है उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।

   सारे स्वर, ग, घ, ङ, ज, झ ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह

2. **<u>अघोष वर्ण</u>** - जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन की मात्रा कम होती है उन्हें अघोष वर्ण कहते हैं।

   क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स

**<u>श्वास के आधार पर वर्णों के दो भेद हैं</u> -**

1. **<u>महाप्राण वर्ण</u>** - जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास की मात्रा अधिक लगती है उन्हें महाप्राण वर्ण कहते हैं।

   **ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह**

2. **<u>अल्पप्राण वर्ण</u>** - जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास की मात्रा कम लगती है उन्हें अल्पप्राण वर्ण कहते हैं।

   **सारे स्वर, क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व**

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

## शब्द विचार

एक या एक से अधिक वर्णों के समुदाय को जिसका कोई अर्थ हो, **शब्द** कहलाता है।

जैसे - आ, जा, वायु, जल, पवन आदि

**अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं -**

**1. सार्थक शब्द** - जिन शब्दों का कुछ अर्थ होता है।

जैसे - मेंढक, आग, घड़ी।

**2. निरर्थक शब्द** - जिन शब्दों का प्रयोग केवल ध्वनि बोध केलिए होता है।

जैसे - वायु सर-सर चलती है। बादल रिम-झिम बरसता है।

**रूपांतर के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं** -

1. **विकारी शब्द** - लिंग, वचन, कारक और पुरुष के कारण रूपांतर होनेवाले शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं।

   जैसे - लड़का, लड़के, लड़कों, लड़की, लड़कियाँ, लड़कियों

   बच्चा, बच्चे, बच्चों, बच्ची, बच्चियाँ, बच्चियों

2. **अविकारी शब्द** - जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक और पुरुष के कारण कोई रूपांतर नहीं होता उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

   जैसे - जल्दी, अभी, और, के साथ आदि।

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

## संज्ञा (Noun)

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को सूचित करनेवाले विकारी शब्द को **संज्ञा** कहते हैं।

जैसे - गोविन्द, राधिका, किताब, कुर्सी, मुँबई, तिरुवनंतपुरम, खुशी, दुख

**संज्ञा <u>तीन</u> प्रकार की होती हैं -**

1. **<u>व्यक्तिवाचक संज्ञा</u>** (Proper Noun) - किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को सूचित करनेवाली संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे - गोविन्द, राधिका, किताब, कुर्सी, मुंबई, तिरुवनंतपुरम

2. **<u>जातिवाचक संज्ञा</u>** (Common Noun) - एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं के नाम को सूचित करनेवाली संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे - आदमी, जानवर, पक्षी (प्राणी) पुस्तक, कपड़ा (वस्तु) नगर, गाँव (स्थान)

3. **<u>भाववाचक संज्ञा</u>** (Abstract Noun) - जिस संज्ञा से किसी गुण, धर्म अथवा भाव का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे - मिठास, सौंदर्य (गुण) बचपन, बुढ़ापा (अवस्था) हर्ष, शोक (भाव)

**<u>भाववाचक संज्ञाएँ तीन प्रकार के शब्दों से बनाई जाती हैं</u> -**

- **जातिवाचक संज्ञा से** -
  लड़का - लड़कपन  मित्र - मित्रता
- **विशेषण से** -
  वीर - वीरता  सफ़ेद - सफ़ेदी
- **धातु से** -
  पढ़ - पढ़ाई  लड़ - लड़ाई  हँस - हँसाई

## <u>संज्ञा में रूपांतर</u>

संज्ञाओं में **<u>लिंग</u>**, **<u>वचन</u>** और **<u>कारक</u>** के कारण रूपांतर होते हैं।

## <u>लिंग</u>

संज्ञा के जिस रूप से उसकी **<u>जाति का बोध</u>** होता है उसे लिंग कहते हैं।

VTM NGS COLLEGE LIBRARY

**<u>हिन्दी में दो लिंग होते हैं</u>** -

1. **<u>पुल्लिंग</u>** - संज्ञा के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि वह **<u>पुरुष जाति</u>** की है उसे पुल्लिंग कहते हैं।

   जैसे - लड़का, घोड़ा, आदमी, बेटा

2. **<u>स्त्रीलिंग</u>** - संज्ञा के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि वह **<u>स्त्री जाति</u>** की है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

   जैसे - लड़की, घोड़ी, औरत, बेटी

**अप्राणिवाचक संज्ञाएँ** कभी अपने रूप के अनुसार और कभी अर्थ के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग मानी जाती है।

घर, पेड़, पौधा, धूप, बादल, फूल, पत्ता, कपड़ा - पुल्लिंग

दीवार, नदी, पानी, छाया, कली, पुस्तक, कलम - स्त्रीलिंग

## <u>लिंग परिवर्तन के नियम</u>

**<u>पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम</u>**

1. पुल्लिंग संज्ञाओं के अन्तिम **'अ'** या **'आ'** के स्थान पर **'ई'** लगाने से-

   पुत्र - पुत्री, बेटा - बेटी, लड़का - लड़की, दादा - दादी, कबूतर - कबूतरी

2. पेशा या व्यवसाय वाचक शब्दों में **'इन'** लगाने से -

   माली - मालिन, लुहार - लुहारिन, भंगी - भंगिन, धोबी - धोबिन,
   तेली - तेलिन

3. कई **'ई'** कारन्त, **'उ'** कारान्त और **'ए'** कारन्त शब्दों में **'इ'**,' **'उ'** और **'ए'** के बदले **'आइन'** लगाने से -

   चौधरी - चौधराइन, गुरु - गुरुआइन, पंडा - पंडाइन

4. कई प्राणिवाचक संज्ञाओं के अंत में **'नी'** लगाने से -

   ऊँट - ऊँटनी, मोर - मोरनी, हाथी - हथनी, सिंह - सिंहनी, शेर - शेरनी

5. कई वर्णवाचक और संबन्धवाचक संज्ञाओं के अंत में **'आनी'** लगाने से -

   खत्री - खत्रानी, सेठ - सेठानी, देवर - देवरानी, चौधरी - चौधरानी, नौकर - नौकरानी

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

6. कुछ संज्ञाओं के अन्त में '**आइन**' लगाने से -

पांडे - पंडाइन, ठाकुर - ठकुराइन, लाला - लालाइन, बाबू - बबुआइन, मिसर - मिसराइन

कुछ शब्दों के दोनों लिंगों में भिन्न भिन्न शब्द होते हैं -

पिता - माता, बैल - गाय, पुरुष - स्त्री, भाई - बहन, राजा - रानी

## वचन

संज्ञा के जिस रूप से उसकी **संख्या का बोध** होता है उसे **वचन** कहते हैं।

**हिन्दी में दो वचन हैं-**

1. **एकवचन** - संज्ञा के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसकी **संख्या एक है** उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे - लड़का, माता, घोड़ा, पुस्तक आदि

2. **बहुवचन** - संज्ञा के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसकी **संख्या एक से अधिक है** उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे - लड़के, माताएँ, घोड़े, पुस्तकें आदि

**बहुवचन बनाने के नियम - पुल्लिंग शब्द**

1. कुछ '**अ**' कारांत पुल्लिंग शब्दों को '**ए**' कारांत करने से उसका बहुवचन रूप मिलता है -

जैसे - लड़का - लड़के, कमरा - कमरे, बेटा - बेटे, चरखा - चरखे

2. कुछ शब्दों के अंत में विशेष शब्द जोड़कर -

जैसे - राजा - राजालोग, बालक - बालकगण, पाठक - पाठकवर्ग, विद्वान - विद्वज्जन, कुटिया - कुटियाँ

3. अपूर्णोच्चरित '**अ**' आनेवाले शब्दों का तथा '**ई**' कारांत पुल्लिंग शब्दों का बहुवचन रूप भी वही होता है। और भी कई पुल्लिंग शब्दों का बहुवचन रूप भी वही होता है।

जैसे - घर - घर, फल - फल, हाथी - हाथी, बालक - बालक, दादा - दादा, भाई - भाई, साधु - साधु, डाकु - डाकु

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

**<u>स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम</u>**

1. **'अ'** कारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम **'अ'** के स्थान पर **'एँ'** करके बहुवचन बनाया जाता है -

   जैसे - बहन - बहनें, बात - बातें, आँख - आँखें, किताब - किताबें, औरत - औरतें, पुस्तक - पुस्तकें

2. **'इ'** कारांत या **'ई'** कारांत स्त्रीलिंग शब्दों के **'इ'** या **'ई'** के स्थान में **'इयाँ'** करने से

   जैसे - सखी - सखियाँ, लड़की - लड़कियाँ, रीति - रीतियाँ, तिथि - तिथियाँ, थाली - थालियाँ

3. **'या'** में अंत होनेवाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम **'या'** को **'याँ'** कर देने से-

   जैसे - बुढ़िया - बुढ़ियाँ, गुड़िया - गुड़ियाँ, डिबिया - डिबियाँ, चिडिया- चिडियाँ, कुटिया - कुटियाँ

4. **'आ'**, **'ए'**, **'ऐ'**, **'औ'** - में अंत होनेवाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में **'एँ'** लगाने से -

   जैसे - लता - लताएँ, माता - माताएँ, गौ - गौएँ

5. **'उ'** में अंत होनेवाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में **'उ'** को ह्रस्व करके **'एँ'** लगाने से

   जैसे - बहू - बहुएँ, लू - लुएँ, जूँ - जुँएँ

## <u>कारक</u>

संज्ञा के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध स्पष्ट होता है उसे कारक कहते हैं।

**कारक को सूचित करने केलिए <u>परसर्ग</u> (विभक्ति प्रत्यय) का प्रयोग होता है।**

**<u>कारकों की संख्या सात (7) मानी जाती हैं -</u>**

1. **कर्ता कारक** - संज्ञा के जिस रूप से **<u>क्रिया करनेवाले</u>** का बोध होता है उसे कर्ता कारक कहते हैं। परसर्ग - **ने**

   जैसे - राम **ने** मारा। ( **राम** संज्ञा के **राम ने** रूप से यह स्पष्ट होता है कि मारनेवाला राम है, अत: **राम ने** कर्ता कारक है )

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

2. **कर्म कारक** - संज्ञा के जिस रूप से यह सूचित होता है कि वह **क्रिया** का कर्म है(क्रिया का फल भोगनेवाला है), उसे कर्म कारक कहते हैं। परसर्ग - **को**

   जैसे - राम ने श्याम **को** मारा (**श्याम** संज्ञा के **श्याम को** रूप से स्पष्ट होता है कि वही फल भोगता है, अत: **श्याम को** कर्म कारक है )

3. **करण कारक** - संज्ञा के जिस रूप से **क्रिया के उपकरण या कारण** का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं। परसर्ग - **से**

   जैसे - राम ने श्याम को छडी **से** मारा। ( छड़ी संज्ञा के **छड़ी से** रूप से स्पष्ट होता है कि मारना क्रिया करने का उपकरण वही है )

   श्याम दर्द **से** रो रहा है। ( दर्द संज्ञा के **दर्द से** रूप से रोने का कारण स्पष्ट होता है, अत: वह करण कारक है )

4. **संप्रदान कारक** - संज्ञा के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि **क्रिया किसके लिए की जा रही है**, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। परसर्ग - **केलिए, को**

   राम श्याम **केलिए** पुस्तक लाया। ( श्याम संज्ञा के साथ केलिए जुड़ने से यह स्पष्ट होती है कि पुस्तक उसके लिए लायी है। अत: **श्याम केलिए** संप्रदान कारक है)

5. **अपादान कारक** - संज्ञा के जिस रूप से **अलग होने का भाव** सूचित होता है उसे आपादान कारक कहते हैं। परसर्ग - **से**

   वृक्ष **से** फल गिरता है। (यहाँ वृक्ष से फल के अलग होने का बोध होता है। अत: **वृक्ष से** अपादान कारक है।)

   मैं घर **से** आता हूँ। (घर से अलग होने का बोध)

6. **संबंध कारक** - संज्ञा के जिस रूप से **दूसरी संज्ञा के साथ संबंध** सूचित होता है उसे संबंध कारक कहते हैं। परसर्ग - **का, के, की**

   राम **का** भाई श्याम है। (यहाँ राम का श्याम से संबंध सूचित होता है।)

   रमा राम **की** बहन है।

   राम **के** दो भाई हैं।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

**7.अधिकरण कारक** - संज्ञा के जिस रूप से **<u>उसके आधार का बोध</u>** होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। परसर्ग - **में, पर**

राम अपने घर **में** बैठा है।

राम कुर्सी **पर** बैठा है। (यहाँ घर में और कुर्सी पर आधार को सूचित करता है।)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | कर्त्ता कारक - क्रिया करनेवाले का बोध - परसर्ग - **ने** | बालक ने किया |
| 2 | कर्म कारक - क्रिया का फल भोगनेवाले का बोध परसर्ग - **को** | बालक को दिया |
| 3 | करण कारक - क्रिया के कारण या उपकरण का बोध परसर्ग - **से** | बालक दर्द से रोता है<br>बालक कलम से लिखता है |
| 4 | संप्रदान कारक- क्रिया किस केलिए की जा रही है इसका बोध परसर्ग - **केलिए**, **को** | बालक केलिए लाया |
| 5 | अपादान कारक - अलग होने का भाव - परसर्ग - **से** | बालक से दूर चला |
| 6 | संबंध कारक - दूसरी संज्ञा के साथ संबंध सूचित होता है<br>परसर्ग - **का**, **के**, **की** | बालक का घर, बालक के भाई, बालक की बहन |
| 7 | अधिकरण कारक - संज्ञा के आधार का बोध होता है<br>परसर्ग - **में**, **पर** | बालक में कई गुण हैं,<br>बालक कुर्सी पर बैठा है। |
| 8 | संबोधन कारक - किसी को पुकारने का बोध होता है<br>परसर्ग - **हे, अरे**, **अबे** | हे बालक , अरे बालक<br>अबे बालक |

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

**<u>सब कारकों में रूप लिखना</u>**

**बालक** - बालक ने, बालक को, बालक से, बालक केलिए, बालक से, बालक का (के, की), बालक में (पर), हे बालक

**लड़का** - लड़के ने, लड़के को, लड़के से, लड़के केलिए, लड़के से, लड़के का (के, की), लड़के में (पर), हे लड़के

**लड़की** - लड़की ने, लड़की को, लड़की से, लड़की केलिए, लड़की से, लड़की का (के, की), लड़की में (पर), हे लड़की

**लड़के** - लड़कों ने, लड़कों को, लड़कों से, लड़कों केलिए, लड़कों से, लड़कों का (के, की), लड़कों में (पर), हे लड़कों

**लड़कियाँ** - लड़कियों ने, लड़कियों को, लड़कियों से, लड़कियों केलिए, लड़कियों से, लड़कियों का (के, की), लड़कियों में (पर), हे लड़कियों

## **सर्वनाम** (Pronoun)

संज्ञा के स्थान पर उसके बदले उसी अर्थ में प्रयुक्त होनेवाला विकारी शब्द है **सर्वनाम**।

**अर्थ की दृष्टि से सर्वनाम के पाँच (5) भेद हैं** -

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** - बोलनेवाले, सुननेवाले या किसी अन्य व्यक्ति को सूचित करने केलिए प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   **पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं -**

   - **उत्तम पुरुष सर्वनाम** (first person) - बोलनेवाले या लिखनेवाले को सूचित करनेवाले सर्वनाम को उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं। **मैं, हम**
   - **मध्यम पुरुष सर्वनाम** (second person) - सुननेवाले या पढ़नेवाले को सूचित करनेवाले सर्वनाम को मध्यम पुरुष सर्वनाम कहते हैं। **तू, तुम, आप**
   - **अन्यपुरुष सर्वनाम** (third person) - जिसके बारे में कुछ कहा या लिखा जाता है उसको सूचित करनेवाले सर्वनाम को अन्यपुरुष सर्वनाम कहते हैं।

     **वह, वे, यह, ये**

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम** - किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित संकेत करने केलिए प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   **वह, वे, यह, ये**

   जैसे - **वह** खिलौना मेरा है। **वे** लड़के हमारे क्लास के हैं।

   **यह** कपड़ा मेरा नहीं है। ये **बच्चे** राम के हैं।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** - अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु को सूचित करता है जिसके बारे में हमें <u>निश्चित रूप से कुछ मालूम नहीं</u>।

**कोई, कुछ**

जैसे - देखो, **कोई** आया है।

वहाँ पर कोई खड़ा है।

खाने केलिए **कुछ** देना।

बरतन में कुछ रखा है।

4. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** - किसी व्यक्ति या वस्तु के विषय में <u>प्रश्न करने केलिए</u> प्रयुक्त सर्वनाम है प्रशनवाचक सर्वनाम।

**कौन, क्या**

जैसे - वहाँ **कौन** खड़ा है ( प्राणियों केलिए प्रयुक्त होता है )

बरतन में **क्या** रखा है ( किसी वस्तु या पदार्थ केलिए प्रयुक्त होता है )

5. **संबंधवाचक सर्वनाम** - संबंधवाचक सर्वनाम <u>एक बात का दूसरी बात से संबंध</u> सूचित करता है।

**जो.....सो**

जैसे - **जो** आदमी कल आया था **सो** आज भी आएगा।

तुम **जो** भी कहोगे **सो** मैं अवश्य करूँगा।

**निजवाचक 'आप '**- खुद या स्वयं अर्थ का बोध कराने केलिए **'आप '** शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे - तुम **आप** देख लो। हम **आप** कर लेंगे।

**मध्यम पुरुष 'आप ' -** मध्यम पुरुष में आदर सूचित करने केलिए **'आप '** शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे - **आप** मेरे साथ आइए। **आप** को अपना नाम बताना है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

# **विशेषण** (Adjective)

किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता को प्रकट करनेवाले विकारी शब्द को **विशेषण** कहते हैं।

जैसे - **लंबा** आदमी, **ऊँचा** महल, **चौडा** रास्ता, **मोटी** रस्सी, **सुंदर** फूल

विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम कि विशेषता को प्रकट करता है उसे **विशेष्य** कहते हैं।

जैसे - **लंबा** आदमी (लंबा - विशेषण, आदमी - विशेष्य), **ऊँचा** महल (ऊँचा - विशेषण, महल विशेष्य), **चौडा** रास्ता (चौडा - विशेषण, रास्ता - विशेष्य)

**विशेषण चार प्रकार के होते हैं** -

1. **गुणवाचक विशेषण** - संज्ञा या सर्वनाम के रंग, रूप, गुण, आकार, दशा, काल, स्थान आदि का बोध करानेवाले विशेषणों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

   **गुणवाचक विशेषण छ (6) प्रकार के हैं -**

   - रंग - लाल, पीला, नीला, सफेद
   - रूप - खूबसूरत, बदसूरत
   - आकार - गोल, लंबा, ऊँचा, नीचा,
   - गुण - सच्चा, मीठा, कुशल, शान्त
   - दशा - तंदुरुस्त, बीमार, कमज़ोर
   - काल - प्राचीन, नवीन, आधुनिक, नया, पुराना
   - देश/स्थान - कश्मीरी, बंगाली, नागरिक, ग्रामीण

2. **संख्यावाचक विशेषण** - संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध करानेवाले विशेषण को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

   **संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं** -

   - **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** - निश्चित संख्या का बोध होता है।

     जैसे - **पाँच** बच्चे, **बीस** लड़के, **तीसरा** बेटा, **तीनों** लड़के

   - **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** - निश्चित संख्या का पता नहीं चलता।

     जैसे - **बहुत, कुछ, कम, हज़ारों, कई, सात-आठ**

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

3. **परिमाणवाचक विशेषण** - जिन विशेषणों के द्वारा किसी प्रकार की **नाप-तोल का पता** चलता है उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

**<u>परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं</u>** -

- **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - निश्चित परिमाण का बोध होता है।
  जैसे - **दो किले** चीनी, **पाँच** मीटर कपड़े, एक लीटर दूध
- **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेशण** - निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता।
  जैसे - **थोड़ा** चावल, **कुछ** कपड़ा, **कुछ** तेल

4. **निर्देशक विश्षण या सार्वनामिक विशेषण** - वस्तुओं की ओर निर्देश करने केलिए सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है तो उन्हें निर्देशक विशेषण या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

**यह** घोड़ा मेरा है ( इसमें यह घोड़े की ओर निर्देश करता है, अत: सार्वनामिक विशेषण है ) ( **यह** मेरा है - इसमें **यह** सर्वनाम है )
**वह** लड़का सोता है ( वह - सार्वनीमिक विशेषण) **वह** सोता है ( **वह** - सर्वनाम )
ये बच्चे, कौन घर, क्या चीज़, कोई आदमी।
ऐसा, वैसा, कैसा, जैसा, इतना, उतना, कितना, जितना आदि भी सार्वनामिक विशेषण हैं।

**<u>स्थान के आधार पर विशेषण के दो भेद हैं</u> -**

- **विशेष्य विशेषण** - विशेष्य के तुरंत पहले प्रयुक्त विशेषण
  **नीला** आकाश, **साफ़** कपड़ा, **सुंदर** बच्चा, **भोली** लड़की

- **विधेय विशेषण** - विशेष्य के बाद तथा क्रिया से पूर्व प्रयुक्त विशेषण
  मेरा मन **भारी** लगता है। घड़ी **कीमती** है। लड़का **बीमार** है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

# विशेषणों की तुलना

**वस्तुओं के गुणों की अक्सर तुलना की जाती है। इस तुलना के आधार पर विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं**

- **मूलावस्था** (positive degree) - किसी से तुलना किए बिना **विशेषण का जो सहज रूप** होता है उसे मूलावस्था कहते हैं।

  जैसे - मोहन **धनी** आदमी है।

  राजू **समझदार** लड़का है।

- **उत्तरावस्था** (comparative degree) - किन्हीं दो वस्तुओं के गुणों की तुलना करके **किसी एक को दूसरे से अच्छा या बुरा बताने** को उत्तरावस्था कहते हैं।

  मोहन श्याम **से अधिक धनी** है।

  राजू गणेश **से अधिक समझदार** लड़का है।

- **उत्तमावस्था** (superlative degree) - कई वस्तुओं के गुणों की तुलना करके **किसी एक को सबसे श्रेष्ठ** बताने की अवस्था।

  मोहन इस शहर के **सबसे अधिक धनी** व्यक्ति है।

  राजू इस स्कूल का **सबसे अधिक समझदार** लड़का है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

## विशेषणों का रूपांतर

**विशेषणों के लिंग और वचन विशेष्य के ही होते हैं**। केवल **अ** कारांत विशेषणों में रूपांतर होता है।

| **पुल्लिंग एकवचन** | **पुल्लिंग बहुवचन** | **स्त्रीलिंग एकवचन** | **स्त्रीलिंग बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| **छोटा** लड़का | **छोटे** लड़के | **छोटी** लड़की | **छोटी** लड़कियाँ |
| **बड़ा** बेटा | **बड़े** बेटे | **बड़ी** बेटी | **बड़ी** बेटियाँ |
| **लंबा** आदमी | **लंबे** आदमी | **लंबी** औरत | **लंबी** औरतें |
| **अच्छा** बच्चा | **अच्छे** बच्चे | **अच्छी** बच्ची | **अच्छी** बच्चियाँ |
| **गरम** समोसा | **गरम** समोसे | **गरम** रोटी | **गरम** रोटियाँ |
| **लघु** उपन्यास | **लघु** उपन्यास | **लघु** कथा | **लघु** कथाएँ |

विशेष्य के साथ कारकीय परसर्ग लगने पर '**आ**' कारांत विशेषण '**ए**' कारांत हो जाते हैं।

जैसे - **बड़ा** कमरा + में = **बड़े** कमरे में

**छोटा** घर + में = **छोटे** घर में

**बूढ़ा** आदमी + ने = **बूढ़े** आदमी ने

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

# क्रिया (Verb)

जिस विकारी शब्द से किसी कार्य का करना या होना सूचित होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे - अध्यापक विद्यार्थियों को **पढ़ाते हैं**।

राजू हिन्दी **लिखता है**।

मेरी बहन कॉलिज में **पढ़ती है**।

पानी **बरसता है**।

**क्रिया करनेवाले को कर्ता कहते हैं और क्रिया का फल भोगनेवाले को कर्म कहते हैं।**

**धातु - क्रिया के सामान्य रूप को धातु कहते हैं।**

जैसे - सो, गा, लिख, उठ, ले, आ। इनके साथ विभिन्न प्रत्यय जोड़ने से उसके विविध रूप बनते हैं।

जैसे - सोना, सोता, सोया, सोयेगा, सो चुका, सो गई आदि।

## कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं

1. **अकर्मक क्रिया** - जिस क्रिया का कर्म नहीं होता, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
2. **सकर्मक क्रिया** - जिस क्रिया का कर्म होता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

**क्रिया के साथ कर्म है या नहीं यह जानने केलिए क्रिया के साथ 'क्या' या 'किसको' प्रश्न पूछना है। इनका जो उत्तर मिलता है वही कर्म है। उत्तर न मिले तो वह अकर्मक क्रिया होगा।**

जैसे - राम आता है। (**'क्या'** आता है **'किसको'** आता है इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं मिलता। इसमें कर्म नहीं है। अत: यह अकर्मक क्रिया है।)

राम श्याम को मारता है। (**'क्या'** मारता है **'किसको'** मारता है - श्याम को मारता है।) इसमें श्याम कर्म है, अत: यह सकर्मक क्रिया है।

**एककर्मक क्रिया** - जिस क्रिया का केवल एक ही कर्म हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।

रमा रोटी खाती है। ( रमा - कर्ता, रोटी - कर्म )

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

**द्विकर्मक क्रिया** - कभी-कभी एक क्रिया के दो कर्म होते हैं जिसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

**एक क्रिया के एक ही कर्म मुख्य होता है, दूसरा कर्म गौण होता है। क्रिया से 'क्या' प्रश्न पूछने पर जो उत्तर मिलता है वह मुख्य कर्म होता है और 'किसको' प्रश्न पूछने पर जो उत्तर मिलता है वह गौण कर्म होता है।**

जैसे - राम ने सीता को फूल दिया।

( क्या दिया ? फूल, किसको दिया ? सीता को)

इसमें **फूल मुख्य कर्म** है और **सीता गौण कर्म** है। )

अध्यापक ने विद्यार्थियों को व्याकरण पढ़ाया।

मोहन ने राजू को किताब दी।

**सजातीय सकर्मक क्रिया** - कभी-कभी सकर्मक या अकर्मक क्रिया के साथ उसी क्रिया से बनी हुई भाववाचक संज्ञा कर्म बनकर आती है जिसे **सजातीय सकर्मक क्रिया** कहते हैं।

जैसे - राजनीतिज्ञ कई चालें चलाता है।

सिपाही लड़ाई लड़ता है।

## रचना या बनावट के आधार पर क्रिया के भेद

### बनावट के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं

1. **मूल क्रिया (रूढ़ क्रिया )** - जो क्रियायें केवल धातुओं से बनती हैं, उन्हें **मूल क्रिया** या **रूढ़ क्रिया** कहते हैं।

   जैसे - पढ़ (धातु) - पढ़ा, पढ़ता है, पढ़ेगा

   सो (धातु) - सोता, सोता है, सोया, सोएगा

2. **यौगिक क्रिया** - जो क्रियायें दूसरे शब्दों से बनती हैं, उन्हें **यौगिक क्रिया** कहते हैं।

   जैसे - खिलाना (खाना शब्द से), रंगना (रंग शब्द से), अपनाना (अपना शब्द से), गरमाना (गरम शब्द से)

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

**यौगिक क्रियायें <u>चार</u> प्रकार की हैं -**

1. **प्रेरणार्थक क्रिया** - कर्ता स्वयं न करके प्रेरणा देकर किसी दूसरे से क्रिया करवाये तो उसे **प्रेरणार्थक क्रिया** कहते हैं।

   प्रेरणार्थक क्रिया में प्रेरणा देनेवाले को **प्रेरक कर्ता** और प्रेरणा पाकर कार्य करनेवाले को **प्रेरित कर्ता** कहते हैं।

   जैसे - स्वामी नौकर से काम करवाता है। ( इस क्रिया से यह मालूम होता है कि स्वामी स्वयं न करके नौकर को काम करने की प्रेरणा देता है।)

   माँ गोविन्द को जगवाया।

   हम ने सारे पत्र डाक से भिजवा दिए।

| **मूल क्रिया** | **पहली प्रेरणार्थक** | **दूसरी प्रेरणार्थक** |
|---|---|---|
| खाना | खिलाना | खिलवाना |
| देना | दिलाना | दिलवाना |
| चलना | चलाना | चलवाना |
| गिरना | गिराना | गिरवाना |

2. **नामधातु क्रिया** - संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के साथ प्रत्यय जोड़ने से **नामधातु** क्रिया बनती है।

   **संज्ञा से** - बात - बताना, लाज - लजाना, हाथ - हथियाना, शरम - शरमाना

   **सर्वनाम से** - अपना - अपनाना

   **विशेषण से** - गरम - गरमाना, लँगड़ा - लँगड़ाना, दुहरा - दुहराना

3. **संयुक्त क्रिया** - संज्ञा, विशेषण, क्रिया अथवा क्रिया विशेषण के साथ दूसरी क्रिया के योग होने से **संयुक्त क्रिया** बनती है।

   जैसे - सेवा करना, आराम करना, बुरा लगना, आगे बढ़ना, कर सकना, सुन लेना

4. **अनुकरणात्मक क्रिया** (अनुकरणवाचक क्रिया) - विभिन्न ध्वनियों का अनुकरण करते हुए बनी क्रियायें **अनुकरणात्मक क्रिया** कहलाती है।

   जैसे - खट-खट - दरवाज़ा खटखटाना  थप-थप - बच्चे को थपथपाना

   हिन-हिन - घोड़े का हिनहिनाना

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

## वाच्य के कारण क्रिया के भेद

**वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि उसके विधान का मुख्य आधार कर्ता है, कर्म है या क्रिया का भाव।**

**वाच्य तीन प्रकार के हैं -**

1. **कर्तृ वाच्य** (Active Voice) - क्रिया के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसके विधान का मुख्य विषय कर्ता है, उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं।
   जैसे - माँ भोजन बनाती है। मैं यहाँ कपड़े सीता हूँ।

   **सामान्य रूप से कर्तृ वाच्य में क्रिया कर्ता के लिंग, वचन का अनुसरण करती है।**
   जैसे - लड़का रोटी खाता है। लड़की रोटी खाती है।
   **लेकिन सकर्मक क्रिया भूतकाल में प्रयुक्त हो तो क्रिया का लिंग, वचन कर्म के अनुसार होता है।**
   जैसे - लड़के ने रोटी खायी। लड़की ने रोटी खायी।
   **ऐसा होने पर भी अर्थ की दृष्टि से कर्ता की ही प्रधानता होती है। अत: ऐसे वाच्यों को भी कर्तृ वाच्य ही मानना चाहिए।**
   जैसे - राधिका ने चार आम खरीदे। रघु ने दो चिट्ठियाँ लिखीं।

2. **कर्म वाच्य** (Passive Voice) - क्रियाओं के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसके विधान का मुख्य विषय कर्म है, उसे कर्म वाच्य कहते हैं।
   जैसे - माँ से भोजन बनाया जाता है।
   मुझसे कपड़ा सीया जाता है।
   राधिका से चार आम खरीदे गये।

3. **भाव वाच्य** (Impersonal Voice)- क्रियाओं के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसके विधान का मुख्य विषय उसका अर्थ अथवा भाव ही है, उसे भाव वाच्य कहते हैं।

VKM NSS COLLEGE LIBRARY

सामान्य रूप से अकर्मक क्रियाओं से ही भाव वाच्य रूप बनते हैं। यही नहीं किसी कार्य के करने में कर्ता की अशक्तता को प्रकट करने केलिए ही भाव वाच्य रूपों का प्रयोग होता है।

जैसे - बीमारी के कारण माँ से भोजन बनाया नहीं जाता।

ज़ुकाम के कारण बच्चे से सोया नहीं जाता।

मुझसे कपड़े सीया नहीं जाता।

**भाव वाच्य क्रिया रूप हमेशा पुल्लिंग एक वचन में रहते हैं। भाव वाच्य की क्रिया अकर्मक होती है, अत: इसका कर्म नहीं होता।**

## अर्थ की दृष्टि से क्रिया के भेद

**अर्थ के आधार पर क्रियाओं के तीन भेद हैं -**

1. **निश्चयार्थ क्रिया** - क्रिया के जिस रूप से कार्य का निश्चय सूचित होता है, उसे निश्चयार्थ क्रिया कहते हैं।

   जैसे - राम ने रावण को मारा। मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा।

2. **संभावनार्थ क्रिया** - क्रिया के जिस रूप से कार्य होने की संभावना का बोध होता है, उसे संभावनार्थ क्रिया कहते हैं।

   जैसे - भगवान तुम्हारी भला करें। राजू परीक्षा लिखता होगा।

3. **विध्यर्थ क्रिया (आज्ञार्थ क्रिया )** - क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य करने का आदेश अथवा आशा सूचित हो, उसे विध्यर्थ अथवा आशार्थ क्रिया कहते हैं।

   जैसे - आप जाइए। सच बोलो। मैं खाना खा लूँ।

## काल के कारण क्रिया के भेद

क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

VVM NSS COLLEGE LIBRARY

**<u>काल तीन प्रकार के होते हैं</u>** -

1. **<u>भूतकाल</u>** (Past tense)- क्रिया के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसका व्यापार समाप्त हो चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं।
   जैसे - उसने कहा। मैं ने खत लिखा।

**भूतकाल के मुख्यत <u>सात</u> भेद हैं -**

- **सामान्य भूतकाल** - इससे यह पता नहीं चलता कि <u>क्रिया कब समाप्त हुई।</u>
  जैसे - राजू ने खत लिखा। गीता ने गाना गाया।
- **आसन्न भूतकाल** - इससे यह पता चलता है कि <u>क्रिया अभी अभी समाप्त हुई</u>।
  जैसे - राजू ने खत लिखा है। गीता ने गाना गाया है।
- **पूर्ण भूतकाल** - इससे यह पता चलता है कि <u>क्रिया बहुत पहले समाप्त हो चुकी है</u>।
  जैसे - राजू न् खत लिखा था। गीता ने गाना गाया था।
- **अपूर्ण भूतकाल** - इससे यह पता चलता है कि <u>क्रिया भूतकाल में हो रहा था</u>, <u>लेकिन वह पूर्ण हुआ या नहीं इस बात का पता नहीं</u>।
  जैसे - राजू खत लिखता था लिख रहा था। गीता गाना गाती थी गा रही थी
- **संदिग्ध भूतकाल** - इससे क्रिया के <u>भूतकाल में होने में संदेह</u> पाया जाये।
  जैसे - राजू ने खत लिखा होगा। गीता ने गाना गाया होगा।
- **संभाव्य भूतकाल** - इससे <u>भूतकाल में क्रिया के होने की संभावना</u> पायी जाती है।
  जैसे - राजू ने खत लिखा हो। गीता ने गाना गाया हो।
- **हेतुहेतुमद् भूतकाल** - इसमें <u>बाद में होनेवाली क्रिया का हेतु पहली क्रिया हो</u>।
  जैसे - यदि राजू खत लिखता तो मैं अवश्य पढ़ता।
  यदि गीता गाना गाती तो मैं ज़रूर सुनता।

2. **<u>वर्तमानकाल</u>** (Present Tense)- क्रिया के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि <u>उसका व्यापार अभी चल रहा है</u>, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

VMNSS COLLEGE LIBRARY

**वर्तमानकाल के <u>चार</u> भेद हैं** -

- **सामान्य वर्तमान काल** - इससे यह स्पष्ट होता है कि क्रिया <u>सामान्य रूप से वर्तमान काल में चल रही</u> है।

  जैसे - राजू खत लिखता है। गीता गाना गाती है।
- **तात्कालिक वर्तमान काल** - इससे वर्तमान काल में <u>क्रिया के चलते रहने का बोध</u> होता है।

  जैसे - राजू खत लिख रहा है। गीता गाना गा रही है।
- **संभाव्य वर्तमान काल** - इससे वर्तमान काल में <u>क्रिया के होने की संभावना</u> पायी जाए।

  जैसे - राजू खत लिखता हो। गीता गाना गाती हो।
- **संदिग्ध वर्तमान काल** - इससे वर्तमान काल में <u>क्रिया के होने में संदेह</u> पाया जाता है।

  जैसे - राजू खत लिखता होगा। गीता गाना गाती होगी।

3. **<u>भविष्यत काल</u>** (Future Tense)- क्रिया के जिस रूप से यह स्पष्ट होता है कि उसका <u>व्यापार आगे होनेवाला है</u>, उसे भविष्यत काल कहते हैं।

   जैसे - राम कल आएगा। मैं चला जाऊँगा।

**<u>भविष्यत काल के दो भेद हैं</u>** -

- **सामान्य भविष्यत काल** - इससे आनेवाले समय में किसी क्रिया के होने का पता चले।

  जैसे - मैं आऊँगा। सीता आएगी।
- **संभाव्य भविष्यत काल** - इससे आनेवाले समय में किसी क्रिया के होने की संभावना पायी जाए।

  जैसे - मैं जाऊँ। लड़की आए।

VKM NSS COLLEGE LIBRARY